॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

आकूति सूक्त

विषय-सूची

आकूतिसूक्त..... 3

आकूतिसूक्त

[अथर्ववेद १९।४] |

इस सूक्तमें शक्तितत्त्व 'आकूति' नामसे व्यक्त हुआ है। 'आकूति' नाम सभी शक्तिभेदों हेतु समान रूप से व्यवहार में आता है। इस सूक्त में इच्छा, ज्ञान तथा क्रिया-शक्ति के इन तीन भेदों को ही आकृति कहा गया है। इस सूक्त के द्रष्टा ऋषि अथर्वाङ्गिरा तथा देवता अग्निस्वरूपा आकूति हैं।

यामाहुतिं प्रथमामथर्वा या जाता या हव्यमकृणोज्जातवेदाः।
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुप्तो वहतु हव्यमग्निरग्नये स्वाहा ॥१॥

सर्वप्रथम अथर्वा ऋषि ने जो आहुति प्रदान की थी, जिस आहुति को जातवेदा अग्निदेव ने सबसे पहले देवों तक पहुँचाया था । हे अग्निदेव ! वहीं आहुति सभी यजमानों से पूर्व मैं आपको प्रदान करता हूँ । आप प्रसन्नतापूर्वक इसे ग्रहण करें, यह आहुति आपको समर्पित है ॥१॥

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
यामाशामेमि केवली सा में अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् ॥२॥

सौभाग्य प्रदायिनी (सरस्वती देवी को हम पहले स्थापित करते हैं। मातृवत् चित्तवृत्तियों को नियन्त्रित करने वाली ये देवी हमारे आवाहन पर अनुकूल हों । हमारी इच्छाएँ पूर्ण हों । मन में स्थित संकल्प पूर्ण हों ॥२॥

आकृत्या नो बृहस्पत आकृत्या न उपा गहि।
अथो भगस्य नो धेह्यथा नः सुहबो भव ॥३॥

हे बृहस्पतिदेव ! प्रबल इच्छाशक्ति के रूप में आप हमें प्राप्त हों । आप हमें ज्ञानरूप ऐश्वर्य प्रदान करें तथा हमारे लिए सुगम रीति से आवाहन योग्य हों ॥३॥

बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम् ।
यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वेत्वस्मान् ॥४॥

आंगिरस कुल में उत्पन्न बृहस्पतिदेव हमारे निमित्त वाणी की अधिष्ठात्री शक्ति की स्तुति करें । देवशक्तियाँ जिनके नियंत्रण में रहती हैं, जो सभी के संगठक हैं, वे अष्ट फलों के प्रदाता बृहस्पति देव हमारे अनुकूल हों ॥४॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।